

होवेन्स टूमैनियन

मालिक और मजदूर

नज़र बहादुर

हिंदी:
अरविन्द गुप्ता





मालिक और मजदूर

एक समय की बात है, दो भाई रहते थे, जो बहुत गरीब थे. उन्होंने फैसला किया कि दोनों में से बड़े को किसी अमीर ज़मींदार के यहाँ मजदूर के रूप में काम करना चाहिए और अपनी कमाई घर भेजनी चाहिए.

छोटा भाई घर पर ही रहा और उसका बड़ा भाई एक अमीर मालिक के पास गया जिसने उसे नौकरी पर रख लिया.

समझौता यह था कि उसे वसंत तक काम करना होगा, जब तक कि पहली कोयल न कूके, लेकिन मालिक ने एक शर्त और जोड़ दी. "यदि हम दोनों में से कोई भी पहले, दूसरे पर गुस्सा होगा, तो वह जुर्माना देगा. यदि तुम मुझ पर गुस्सा होते हो, तो तुम मुझे - एक हजार रूबल दोगे. यदि मैं तुम पर गुस्सा होता हूँ, तो मैं तुम्हें एक हजार रूबल का भुगतान करूंगा."

"लेकिन मेरे पास पैसे नहीं हैं!" मजदूर चिल्लाया.

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता. यदि तुम हार गए, तो फिर तुम मेरे मजदूर बने रहना और मेरे लिए दस साल तक बिना वेतन के काम करना!"

पहले तो मजदूर ने मना करना चाहा, लेकिन फिर उसने सोचा;

"देखो मैं खुद पर नियंत्रण रख सकता हूँ और मैं कभी गुस्सा नहीं करूंगा. अगर मालिक ने अपना गुस्सा खो दिया, तो उसे मुझे एक हजार रूबल देने होंगे. मैं भला क्या खो सकता हूँ?"

फिर मजदूर ने शर्त मंजूर कर ली.

अगली सुबह मालिक ने उसे खेतों में काम करने के लिए भेजा.

उसने कहा, "एक हंसिया लो और जब तक रोशनी है तब तक घास काटो."

मजदूर दिन भर खेत में मेहनत करता था और शाम को पूरी तरह थककर घर लौटता था. तब मालिक उससे कहता:

"तुम इतनी जल्दी घर क्यों आए?"

"आपका क्या मतलब है? देखिए, सूरज डूब गया है!"

"देख, उससे क्या? क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि जब तक रोशनी रहे तब तक तुम काम करो? सूरज डूब गया है, लेकिन चंद्रमा तो ऊपर आसमान में है, और काम करने के लिए उसकी रोशनी काफी है."

"क्या आपका मतलब है कि मैं बिल्कुल आराम नहीं करूँ?" मजदूर चिल्लाया.

"अच्छा - तो तुम गुस्सा हो रहे हो!"



"नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं गुस्सा हूँ... केवल मैं बहुत थक गया हूँ... मैं बस थोड़ा आराम करूंगा और फिर खेत में बाहर जाऊंगा."

उसने चाँद डूबने तक पूरी रात काम किया. लेकिन फिर सूरज फिर उग आया. बेचारे थककर नीचे ज़मीन पर गिर पड़ा. वह अपने मालिक को कोसने लगा.

"तुम्हारा खेत, तुम्हारी रोटी, और तुम्हारे पैसे सबको शाप लगे!" मजदूर चिल्लाया.

उसी क्षण मालिक उसके पास आया और बोला:

"अच्छा तो तुम गुस्सा हो! हमारे समझौते को मत भूलो. अब या तो तुम मुझे एक हजार रूबल का भुगतान करो, या फिर दस साल तक बिना वेतन के मेरे लिए काम करो."

मजदूर को समझ नहीं आया कि वह क्या करे. उसके पास पैसे नहीं थे, लेकिन वह ऐसे कठोर मालिक के लिए काम नहीं कर सकता था. अंत में, उसने एक कागज पर हस्ताक्षर किए जिसमें लिखा था कि उस पर मालिक के एक हजार रूबल बकाया हैं. और फिर वो खाली हाथ अपने घर चला गया.

उसके छोटे भाई ने उससे पूछा कि क्या हुआ, फिर उसने अपनी पूरी कहानी बताई.

"कोई बात नहीं है. तुम बिल्कुल चिंता मत करो," छोटे भाई ने कहा. "अब तुम घर पर रहो, और मैं जाकर कोई काम ढूँढ़ूंगा."

छोटा भाई उसी मालिक के पास गया जिसके लिए उसका बड़ा भाई काम करता था.

मालिक ने उसे वही शर्तें पेश कीं. यदि मजदूर गुस्सा हुआ, तो उसे मालिक को एक हजार रूबल का भुगतान करना होगा, या फिर बिना वेतन के दस साल तक काम करना होगा.

यदि मालिक गुस्सा हुआ तो उसे मजदूर को एक हजार रूबल का भुगतान करना होगा, और उसे मुक्त कर देना होगा।

"नहीं, यह पर्याप्त नहीं है," छोटे भाई ने कहा। "देखिये यदि आप मुझे पर गुस्सा हों तो आप मुझे दो हजार रूबल दें, और यदि मैं गुस्सा हों तो मैं आपको दो हजार रूबल दूंगा - या बिना वेतन के आपके लिए बीस साल काम करूंगा!"

"बिल्कुल ठीक है!" मास्टर उत्सुकता से चिल्लाया, और उसने उस आदमी को काम पर रख लिया।

अगली सुबह सूरज पहले ही तेज हो गया था, लेकिन मालिक ने देखा कि मजदूर अभी भी गहरी नींद में सोया था।

"अभी उठो! लगभग दोपहर हो गई है, और तुम अभी तक काम पर नहीं गए हो!"

"आपको गुस्सा आ रहा है, क्या?" मजदूर ने अचानक आँखें खोलते हुए पूछा।

"नहीं, नहीं, मैं बिल्कुल गुस्सा नहीं हूँ।" मालिक ने झट से उत्तर दिया, "मैं केवल सुझाव दे रहा था कि अब समय हो गया है और तुम जाकर खेत में घास काटना शुरू करो।"

"देखिए उसके लिए अभी काफी समय बाकी है," मजदूर ने आलस्य से उत्तर दिया।

आखिर में वह उठा और फिर धीरे-धीरे अपने जूते पहनने लगा।

"क्या तुम थोड़ा जल्दी नहीं कर सकते?"

"क्यों, क्या आप गुस्सा हो रहे हो?"

"नहीं, नहीं, मैं केवल यह कह रहा था कि तुम्हें काम के लिए देरी हो जाएगी।"

"ठीक, वो बात अलग है। लेकिन हम अपने समझौते को याद रखें - आपको उसे पूरा करना होगा, आप जानते हैं।"

जब तक मजदूर तैयार होकर खेत में पहुंचा, तब तक दोपहर होने को थी। अब काम करने से क्या फायदा? बहुत देर हो चुकी थी। देखो, सब लोग दोपहर का भोजन कर रहे थे। "चलो मैं भी खाना खाता हूँ," मजदूर ने कहा।

फिर उसने अन्य मजदूरों के साथ बैठकर खाना खाया। अपना काम पूरा होने के बाद, मजदूर ने कहा: "मैं एक कामकाजी आदमी हूँ। मुझे अपनी ताकत बनाए रखने के लिए एक छोटी सी झपकी की जरूरत है।" उसके बाद वह सो गया और शाम तक सोता रहा।

"जल्दी उठो! क्या तुम्हें कोई शर्म नहीं है?" मालिक उसे झकझोरते हुए चिल्लाया।

"पड़ोसियों ने अपने खेतों की कटाई पूरी कर ली है, जबकि हमारा खेत अभी तक अछूता है! तुम कैसे मजदूर हो!"

"मुझे लगता है इस बार आप सचमुच गुस्से में हैं!" मजदूर ने सिर उठाते हुए कहा।

"नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं। मैं बस तुमसे कह रहा था कि अब घर जाने का समय हो गया है।"

"ठीक है, वह बात सही है। चलो, फिर घर चलते हैं।"

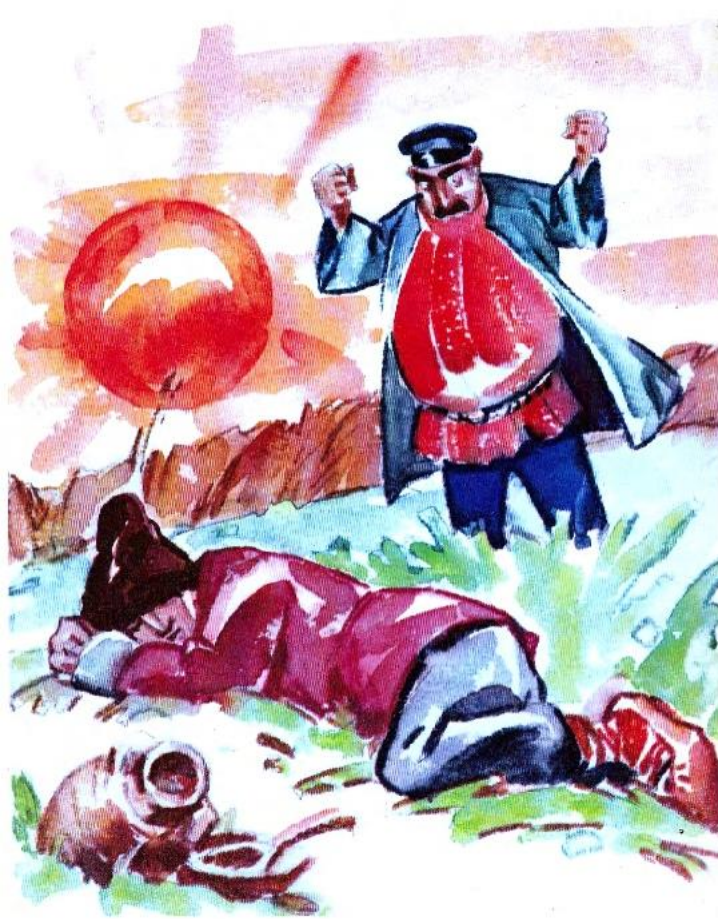
जब वे घर पहुँचे, तो मालिक ने एक मेहमान को अपनी प्रतीक्षा करते हुए पाया। उसने मजदूर को भेड़ मारने के लिए भेजा ताकि वो मेहमान के लिए भोजन तैयार कर सके।

"मैं कौन सी भेड़ मारूँ?" मजदूर ने पूछा,

"कोई भी जिसे तुम पकड़ सको," मालिक ने कहा।

मजदूर चला गया। इसके तुरंत बाद पड़ोसी दौड़ते हुए मालिक के पास आए और बोले, "आपका मजदूर पागल हो गया है, उसने आपकी सभी भेड़ों को मार डाला है!"

मालिक घर से बाहर भागा और उसने देखा कि उसकी सभी भेड़-बकरियां मरी पड़ी थीं।



"तुमने यह क्या किया, तुम्हें धिक्कार है?" मालिक चिल्लाया. "तुमने मुझे बर्बाद कर दिया! भगवान तुम्हें सज़ा दे!"

"लेकिन आपने ही तो मुझसे कहा था कि मैं जो भी पकड़ सकूँ उसे मार डालूँ, और मैंने उन सभी को पकड़ लिया," मजदूर ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया. "क्या ऐसा हो सकता है कि आप गुस्से में हैं?"

"नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं. मुझे बस इस बात का दुख है कि मेरी सारी भेड़ें मर गई हैं." मजदूर ने कहा, "फिर ठीक है. अगर आप मुझसे गुस्सा नहीं हैं, तो मैं अभी भी आपके लिए काम कर सकता हूँ." वह कुछ महीनों तक काम करता रहा और अपनी चालों से उसने अपने मालिक को लगभग पागल कर दिया. आखिरकार, मालिक ने उससे छुटकारा पाने का फैसला किया.

उनके समझौते की शर्तों के अनुसार, मजदूर को जंगल में पहली कोयल के बोलने तक रुकना था. मालिक ने निर्णय लिया कि वह इस धारा का उपयोग करेगा. हालाँकि, सर्दी अभी शुरू ही हुई थी और कोयल के कूकने में अभी काफी समय था, इसलिए वह अपनी पत्नी को अपने साथ जंगल में ले गया. उसने उसे एक पेड़ पर चढ़ने में मदद की, और उससे कहा कि वह वहीं बैठे और कोयल की तरह कू-कू करे. फिर वह घर गया, और उसने मजदूर से कहा कि वे जंगल में एक साथ शिकार करने चलेंगे.

जंगल में प्रवेश करते ही मालिक की पत्नी चिल्लाने लगी, "कू-कू! कू-कू!" मालिक, मजदूर की ओर मुड़ा और बोला, "बधाई हो! वो पहली कोयल की कू-कू! है और अब तुम आज़ाद हो!"

मजदूर अपने मालिक की चाल को समझ गया.

"नहीं," उसने कहा, "सर्दी की शुरुआत में कोयल कैसे कूक सकती है? वो वास्तव में एक बहुत ही अजीब प्रकार की कोयल होगी. मैं इसे शूट करूँगा, और उसे अच्छी तरह से देखूँगा!"



इसके साथ ही उसने अपनी बंदूक उठाई और उस पेड़ पर निशाना साधा जिस पर मालिक की पत्नी बैठी थी।

मालिक मजदूर पर टूट पड़ा और उससे बंदूक छीनने की कोशिश की। "तुम्हें शाप लगे, तुम एक डाकू हो! मैं अब तुम्हारी चालें और बर्दाशत नहीं कर सकता!"

"आह, अब आप स्वीकार कर रहे हैं कि आप सचमुच में गुस्सा हैं," मजदूर उत्सुकता से चिल्लाया।

"हाँ, हाँ, मैं गुस्सा हूँ! मैं वो स्वीकार करता हूँ!" मालिक ने कहा। "आओ, मैं तुम्हें तुम्हारे दो हजार रूबल दूंगा, बस तुम चले जाओ और मुझे यहाँ शांति से छोड़ दो। अब मुझे वह पुरानी कहावत समझ में आई है जिसके अनुसार, "कभी दूसरों के लिए गड़ढे मत खोदो, हो सकता है कि एक दिन तुम खुद ही उनमें न गिर जाओ!"

फिर छोटा भाई अपनी जेब में हजार रूबल लेकर घर चला गया।





नज़र बहादुर

एक समय की बात है, एक किसान रहता था, जिसका नाम नज़र था. वह आलसी, निकम्मा और कायर था, इतना कायर कि वह अकेले एक भी कदम उठाने से डरता था. वह हमेशा अपनी पत्नी की स्कर्ट से चिपका रहता था; वह जहां भी जाती, वह उसका पीछा करता था. और लोगों ने उसका उपनाम "कायर नज़र" रख था.

एक रात कायर नज़र ने अपनी पत्नी का पीछा किया. वह दरवाज़े के बाहर खड़ा हो गया और चारों ओर सब कुछ उज्ज्वल चांदनी से जगमगाता हुआ देखकर बोला:

"यह रात मेरे लिए है! मुझे उस कारवां पर हमला करने और लूटने की इच्छा हो रही है जो हिंदुस्तान से शाह के शहर तक जा रहा है. और फिर मेरा घर धन से भर जाएगा!"

"चुप रहो, मूर्ख! तुम्हारे जैसा कायर कैसे एक कारवाँ को लूटने की हिम्मत कर रहा है! तुम बिस्तर पर वापस जाकर लेट जाओ और वहीं आराम करो!"

फिर नज़र ने अपनी पत्नी को डांटना शुरू कर दिया.

"तुम मूर्ख हो औरत! अब तुम मुझे शाह के कारवां को लूटने और अपने घर को धन से भरने से रोक रही हो! क्या मैं एक आदमी हूँ, या नहीं हूँ? मेरे साथ बहस करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई!"

यह देखकर कि उसका गुस्सा बढ़ रहा था और वह शांत नहीं होगा, उसकी पत्नी घर में वापस चली गई और उसने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया.

"जाओ, अगर तुम लूट सकते हो, तो जरूर शाह का कारवां लूटो, बूढ़े मुर्गी-दिल वाले!" पत्नी ने व्यंग्य किया.

नज़र आँगन में खड़ा हो गया, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था.

"मुझे अंदर आने दो! कृपया, मुझे अंदर आने दो!" उसने भीख मांगी.

लेकिन पत्नी ने दरवाजा नहीं खोला. कुछ समय तक वह पत्नी से व्यर्थ विनती करता रहा, अंततः उसने हार मान ली, और फिर एक दीवार के सहारे बैठ गया और सुबह तक ठंड में कांपते हुए वहीं इंतजार करता रहा.

रात बीत गई और सुबह हो गई, और नज़र धूप में बेचैनी से उंच रहा था और पत्नी का उसे अंदर आने देने का इंतजार कर रहा था. गर्मी का मौसम था और वहां हर जगह मक्खियाँ थीं. मक्खियाँ झुंड में नज़र के चेहरे पर आकर बैठ गईं.

पहले तो, वह इतना आलसी था कि हाथ बढ़ाकर मक्खियों पर हमला करने का उसने कोई प्रयास नहीं किया, लेकिन अंत में, वह मक्खियों को सहन नहीं कर सका और उसने अपना माथा पीट लिया. फिर उसके चारों ओर मरी हुई मक्खियाँ गिर गईं.

"अहा!" नज़र बुदबुदाया, "मुझे आश्चर्य है कि मैंने इतनी सारी मक्खियों को मार डाला है?"

उसने मरी हुई मक्खियों को गिनना शुरू किया, लेकिन जल्द ही वो गिनती भूल गया.

"वैसे भी, कम-से-कम एक हजार तो होनी ही चाहिए," उसने सोचा. "मुझे कभी नहीं पता था कि मुझमें इतना दम है! अगर कोई एक ही झटके में एक हजार प्राणियों को मार सके, तो मुझे यकीन है कि वो आदमी अपनी पत्नी के बिना काम चला सकेगा!"

फिर वो उठा और सीधा गाँव के पुजारी से मिलने चला गया.

"पिताजी, मुझे आशीर्वाद दें."

पुजारी ने कहा, "भगवान तुम्हें आशीर्वाद दे, मेरे बेटे."

"ऐसा है, पिताजी," नज़र ने शुरुआत की और उसने पुजारी को अपने पराक्रम के बारे में बताया. साथ ही कहा कि वो अपनी पत्नी को भी छोड़ देगा. उसने पुजारी से अपने पराक्रम को लिखने के लिए कहा ताकि उसकी बहादुरी अज्ञात न रहे और हर कोई उसे पढ़ सके और उसके बारे में जान सके.

मज़ाक के तौर पर, पुजारी ने एक पुराने कपड़े पर लिखा:

"नज़र बहादुर, जो डर नहीं जानता है,

एक ही झटके में वो हजारों को मार डालता है!"



पुजारी ने वह लिखा हुआ चिथड़ा नज़र को दे दिया, जिसने उसे एक लंबे डंडे पर लगाया, एक जंग लगी पुरानी तलवार अपनी पर बेल्ट लगाई, फिर वो अपने गधे पर सवार हुआ और गाँव से बाहर निकला.

नज़र आगे बढ़ता गया, उसे नहीं पता था कि वह कहाँ जा रहा था. थोड़ी देर बाद उसने पीछे मुड़कर देखा तो गाँव बहुत पीछे छूट गया था और उसके बाद वह डर गया. उसने अपना साहस बनाए रखने के लिए गुनगुनाना, गाने गाना, खुद से बात करना और गधे पर चिल्लाना शुरू कर दिया. वह और ज़ोर से चिल्लाने लगा और आखिरकार उसका गधा भी जवाब में रँकने लगा.

वे आगे बढ़े. एक चिल्ला रहा था और दूसरा और भी जोर-जोर से चिल्ला रहा था. जिन्होंने भी उन्हें सुना वे डर गए, पक्षी उड़ गए, खरगोश जंगल में भाग गए और मेंढक टर्-टर् करते हुए पानी में कूद पड़े.

लेकिन जब वे जंगल में पहुंचे तो नज़र पहले से भी अधिक डर गया. उसे ऐसा लग रहा था कि हर झाड़ी और पेड़ के पीछे कोई जंगली जानवर या डाकू छिपा हुआ था, जो उस पर हमला करने को तैयार था. अब वह जितना संभव हो सका उतनी जोर से चिल्लाने लगा, जो किसी भी सुनने वाले के दिल में डर पैदा करने के लिए काफी था.

और, फिर सच में, वैसा ही हुआ कि पड़ोसी गांव का एक किसान अपने घोड़े की लगाम पकड़कर जंगल के रास्ते उनकी ही ओर जा रहा था. जब उसने भयंकर शोर सुना तो वह कॉपने लगा और चिल्लाने लगा, "हे भगवान! लुटेरे!" वह अपने घोड़े को सड़क पर छोड़कर जंगल में छिपने के लिए भाग गया.

नज़र उस स्थान पर पहुँचा जहाँ उस आदमी ने अपना घोड़ा छोड़ा था. नज़र ने बिना सवार का घोड़ा काठी और लगाम बंधे वहाँ खड़ा देखा. इससे ज़्यादा उसे और क्या चाहिए था? वह तुरंत अपने गधे से उतरा, घोड़े पर चढ़ गया और चल दिया.

नज़र कितनी दूर तक चला, उसने लंबा रास्ता तय किया या छोटा रास्ता, यह केवल वह ही जानता है, लेकिन कुछ समय बाद वह एक गांव में पहुँचा. वह पहले कभी वहाँ नहीं गया था, और वह नहीं जानता था कि उसे कहाँ जाना था. अचानक उसे संगीत सुनाई दिया. उसकी ओर बढ़ते हुए, उसने देखा कि बहुत से लोग शादी की दावत के लिए वहाँ पर इकट्ठे हुए थे.

"अभिवादन!"

"आपको भी नमस्कार, अजनबी! सम्मान की सीट लें, और हमारे मेहमान बनें."

उन्होंने नज़र को सम्मान के स्थान पर बैठाया और उसके लिए काफी मात्रा में शराब और भोजन लाए. मेहमान आश्चर्यचकित थे कि वह कौन हो सकता था. उसके दाहिनी ओर बैठे व्यक्ति ने अपने पड़ोसी को कुहनी मारी, जिसने अगले व्यक्ति को कुहनी मारी, और इस प्रकार कुहनी मेज के चारों ओर तब तक चली जब तक कि वह कुहनी पुजारी के पास नहीं पहुंची, जो नज़र के बाईं ओर बैठा था. पुजारी ने नज़र के "बैनर" को देखा, और फिर उसे सबके सामने पढ़ा.

"नज़र बहादुर, जो डर नहीं जानता है,
एक ही झटके में वो हजारों को मार डालता है!"

पुजारी ने विस्मय के साथ यह बात अपनी बारीयों और बैठे लोगों को बताई, जिन्होंने वो बात अपने पड़ोसी को फुसफुसाई, और इस प्रकार यह बात मेज के चारों ओर घूमती रही जब तक कि वह नज़र के दाहिनी ओर बैठे अतिथि तक नहीं पहुंची.

सभी बहुत प्रभावित हुए जब उन्हें पता चला कि उनका मेहमान किसी शूरवीर से कम नहीं था.

"नज़र बहादुर, जो डर नहीं जानता है,
एक ही झटके में वो हजारों को मार डालता है!"

अचानक मेहमानों में से एक, जो घमंडी के रूप में जाना जाता था, चिल्लाया. "क्यों, बिल्कुल! वह तो बहादुर नज़र है! वह कितना बदल गया है. मैं मुश्किल से ही उसे पहचान पाया."

उसके बाद अन्य लोगों में से कई लोगों ने भी नज़र बहादुर को याद करना शुरू कर दिया, और उसके द्वारा किए गए महान कार्यों की कहानियां बताईं. वे यह बताना नहीं भूले कि वे उसे कितने समय से जानते थे और उन्होंने उसके साथ कितने सारे दिन बिताए थे.



"इतना महान व्यक्ति नौकरों के बिना कैसे यात्रा कर सकता है?"
कुछ लोगों ने संदेहपूर्वक पूछा,

"क्यों? वह इसलिए है क्योंकि उसे नौकर रखना पसंद नहीं है. वह कहता है, "जब सारी दुनिया मेरी सेवा करती है, तो मुझे नौकर क्यों चाहिए?"

"वह इतनी जंग लगी पुरानी तलवार क्यों रखता है?"

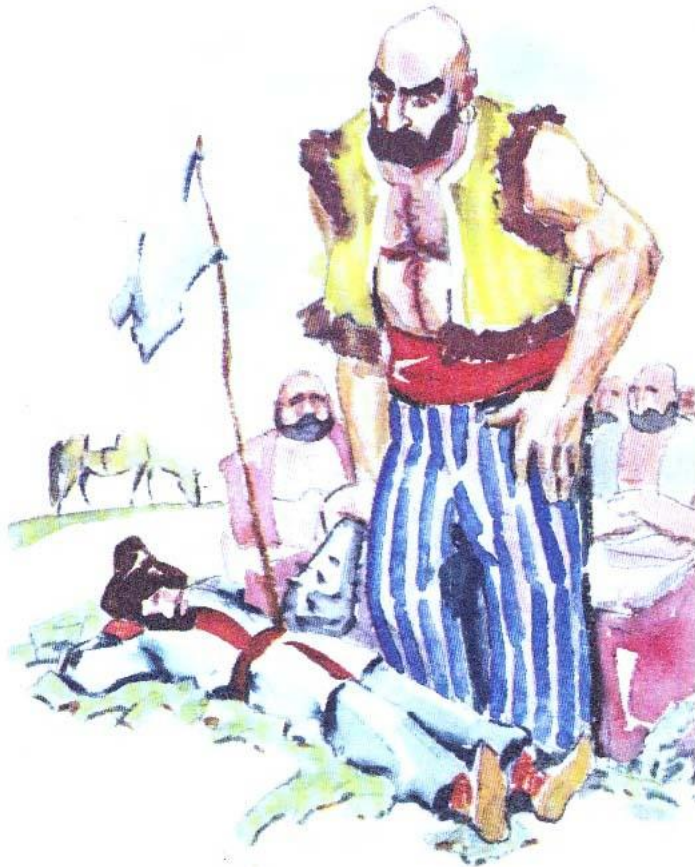
"क्यों, वह तलवार उसकी बहादुरी को दर्शाती है. एक अच्छी तलवार के साथ, कोई भी काफी बहादुर बन सकता है, लेकिन नज़र अपनी जंग लगी पुरानी तलवार के एक ही वार से ही हजारों लोगों को मार डालता है!"

सभी मेहमानों ने नज़र बहादुर की अच्छी सेहत के लिए शराब पी और उपस्थित व्यक्तियों में से सबसे महत्वपूर्ण आदमी ने एक भाषण दिया.

"तुम्हारे कारनामों की प्रसिद्धि हम तक बहुत पहले ही पहुंच गई थी, नज़र बहादुर! और आज तुम्हें अपने साथ पाकर हम सम्मानित महसूस कर रहे हैं!"

नज़र ने केवल एक आह भरी और अपना हाथ हिलाया. मेहमानों ने यह दिखाने के लिए अर्थपूर्ण नज़रों का आदान-प्रदान किया कि वे नज़र की आह और उसके हाथ लहरने के गहरे महत्व को बखूबी समझते थे.

तब लोग उठे और उन्होंने नज़र के सम्मान में एक गीत गाया.



"आपका स्वागत है! हम आपकी शक्ति की सराहना करते हैं
हमारे पर्वत की महान चील!

हमारी भूमि का मुकुट और महिमा, हमारी रोशनी!
नज़र बहादुर, जो डर नहीं जानता है,
एक ही झटके में वो हजारों को मार डालता है!"

"कमजोरों का चैंपियन, बीमारों का डॉक्टर,
दर्द, शोक और बेईमानी से हमारा उद्धारकर्ता,
जो विनम्र और नम्र लोगों को अन्याय से बचाता है!
नज़र बहादुर, जो डर नहीं जानता है,
एक ही झटके में वो हजारों को मार डालता है!"

"हम बलिदान के मेमनों के समान तुम्हारे लिये रहेंगे,
आपके बैनर, आपकी तलवार और आपके घोड़े को भी,
और उसके अयाल और उसकी पूँछ और उसके जूते को!
नज़र बहादुर, जो डर नहीं जानता है,
एक ही झटके में वो हजारों को मार डालता है!"

और जब शराबी मेहमान तितर-बितर हो गए, तो वे जहां भी गए,
गाने लगे, चिल्लाने लगे,
"नज़र बहादुर, जो डर नहीं जानता है,
एक ही झटके में वो हजारों को मार डालता है!"

उन्होंने लोगों को उसके उल्लेखनीय कारनामों के बारे में बताया और
उसके भयंकर रूप का वर्णन किया. और उसके बाद लोग अपने नवजात
शिशुओं का नाम नज़र रखने लगे.

नज़र ने शादी की दावत छोड़ दी और अपने रास्ते पर आगे बढ़ा. एक हरे घास के मैदान में पहुंचकर, वह उतरा और उसने अपने घोड़े को चरने के लिए खुला छोड़ दिया. उसने अपना बैनर जमीन में गाड़ दिया, और उसके नीचे सोने के लिए लेट गया.

अब ऐसा हुआ कि एक पड़ोसी पहाड़ की चोटी पर महल में सात विशाल योद्धा भाई रहते थे. अपने महल से नीचे देखने पर, वे अपने खेत में किसी को सोते हुए देखकर आश्चर्यचकित रह गए.

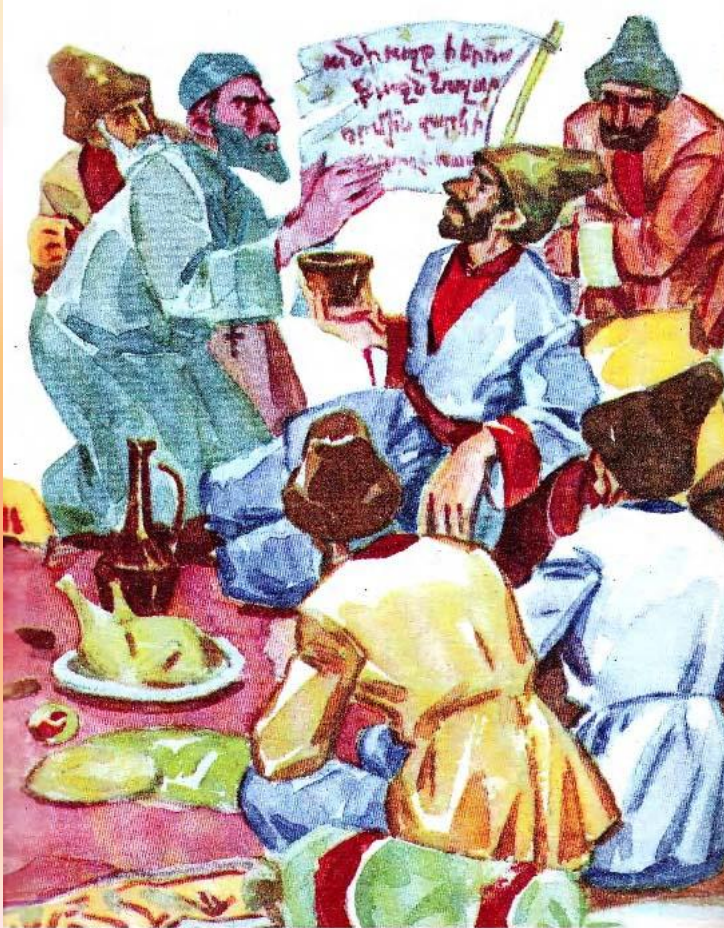
"कौन इतना बहादुर और ताकतवर हो सकता है कि हमारी ज़मीन पर अतिक्रमण करने की हिम्मत करे, और यहां तक कि उस पर सो भी जाए?" उन्होंने सोचा. और फिर अपने विशाल गर्दों को लेकर वे यह देखने के लिए मैदान में उतरे कि अतिक्रमण करने वाला कौन हो सकता था. उन्होंने देखा की एक घोड़ा घास चर रहा है, और एक आदमी एक बैनर के नीचे जमीन पर सो रहा था, जिस पर लिखा था:

"नज़र बहादुर, जो डर नहीं जानता है,
एक ही झटके में वो हजारों को मार डालता है!"

'अहा! तो, यह खुद बहादुर नज़र ही है!' वे आश्चर्यचकित स्वर में चिल्लाए, क्योंकि शराब के नशे में धुत बरातियों ने इतनी दूर तक नज़र की ख्याति फैलाई थी. इसलिए वहीं खड़े होकर नज़र के जागने का इंतज़ार करने लगे.

जब नज़र उठा और उसने देखा कि सात योद्धा अपने विशाल गर्दों के साथ उसके ऊपर खड़े थे, तो वह डर के मारे लगभग मर गया, और उसने अपने बैनर के खंभे के पीछे छिपने की कोशिश की. उसे पीला और काँपता देखकर दिग्गजों ने सोचा कि वह वाकई गुस्से में है और एक ही झटके में उन्हें खत्म कर देगा, इसलिए वे रोते हुए अपने घुटनों पर गिर पड़े.





"अच्छा तो यह जनाब नज़र बहादुर हैं, जो कोई डर नहीं जानते हैं! हमने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है, और हम वास्तव में आपकी यात्रा से सम्मानित हुए हैं. हमारा महल उस पार पहाड़ पर है. हमारी एक बहुत खूबसूरत बहन है, जो हमारे साथ रहती है. हम आपसे विनती है कि आप हमारे महल में आएँ और हमारे मेहमान बनें!"

नज़र ने अपनी बुद्धि नहीं खोई और अपने घोड़े पर सवार हो गया, और सात दिग्गज योद्धा, उसका बैनर लेकर, उसे अपने महल में ले गए.

वहाँ उन्होंने बड़े सम्मान के साथ उसका स्वागत किया, और उसके साहस और मर्दाना गुणों की इतनी प्रशंसा की कि उनकी बहन, खूबसूरत इयर, को तुरंत उससे प्यार हो गया. नज़र का सितारा निश्चित रूप से चमक रहा था, और जिस सम्मान के साथ उसे रखा गया था वह लगातार बढ़ता ही जा रहा था.

उसी समय उस क्षेत्र में एक महान जंगली बाघ प्रकट हुआ. आस-पड़ोस में हर कोई भयभीत था, और लोग एक-दूसरे से पूछ रहे थे, "इस भयानक बाघ से हमें कौन छुटकारा दिलाएगा? क्यों, निःसंदेह बहादुर नज़र! भला और कौन उस भयानक जानवर का सामना करने की हिम्मत करेगा?"

सभी की निगाहें नज़र की ओर थीं: जैसे भगवान स्वर्ग में थे, वैसे ही बहादुर नज़र पृथ्वी पर था.

जब नज़र ने "बाघ" शब्द सुना, तो वह इतना डर गया कि वह वहां से भाग निकला। अब जितनी तेजी से उसके पैर उसे ले जाते वो उतनी तेजी से अपने घर पहुंचना चाहता था। लेकिन सभी लोगों ने फैसला किया कि नज़र अपने नंगे हाथों से बाघ को मारने के लिए भागा था, और फिर उसकी खूबसूरत दुल्हन ने उसे बुलाया:

"रुको, रुको मेरे हीरो! तुम निहत्थे बिल्कुल मत जाओ!"

नज़र के पास हथियार लाए गए, और फिर वो पूरी तरह से लैस होकर, नज़र अपने घोड़े पर चढ़ गया और सरपट भाग गया। उसे न तो पता था और न ही उसे इसकी परवाह थी कि वह कहाँ जा रहा था; वह बस जितना संभव हो सके उतना दूर जाना चाहता था। एक जंगल में आकर, वह अपने घोड़े से उछला और फिर एक पेड़ पर चढ़ गया, यह सोचकर कि वह वहां अधिक सुरक्षित रहेगा। वह एक टहनी से चिपक गया, आतंक के कारण जीवित से अधिक मृत, उसका दिल बेतहाशा धड़कने लगा। जैसा कि किस्मत में लिखा था, बाघ आया और उसी पेड़ के नीचे आकर लेट गया। जब नज़र ने बाघ को देखा, तो उसका खून जम गया और उसकी आँखों के सामने सब कुछ अंधकारमय हो गया। उसकी भुजाएँ कमज़ोर हो गईं, और उसने अपनी पकड़ खो दी और सीधे बाघ की पीठ पर जाकर गिर पड़ा।

जानवर इतना आश्चर्यचकित हुआ कि वह घबराहट में उछल पड़ा और पहाड़ियों और घाटियों से होकर भागा, और नज़र अपनी जान बचाने के लिए उसकी पीठ पर चिपक गया। जिन लोगों ने उन्हें देखा वे चिल्ला उठे:

"देखो! नज़र बहादुर ने बाघ को वश में कर लिया है, और वो घोड़े की तरह उस पर सवारी कर रहा है!"

उन सभी ने अपने खंजर, अपनी बंदूकें और अपनी तलवारें पकड़ लीं, और दौड़कर बाघ को मार डाला।

अपनी बुद्धि का दुबारा इस्तेमाल करते हुए नज़र को फिर से होश संभाला और कहा:

"बड़े अफ़सोस की बात कि तुमने उस जानवर को मार डाला! मैंने अभी-अभी उसे वश में किया था। मैं घोड़े की जगह उसका उपयोग करना चाहता था।"

कुछ ही समय में यह खबर दूर-दूर तक फैल गई और उन्होंने महल में नज़र का भव्य स्वागत किया। उन्होंने उसकी महिमा के लिए एक गीत गाया जो इस प्रकार था:

"सारी सृष्टि में

किसी भी राष्ट्र में

कौन है तुम्हारे बराबर,

हे नज़र बहादुर?

"बिजली का कांटे की तरह

बाज़ के प्रहार की तरह

तुमने हमारे लोगों को बचाया

हे नज़र बहादुर!

"एक बाघ जिसका तुमने पीछा किया

मानो वह कोई घोड़ा हो

और उसकी पीठ पर पहाड़ी की सवारी की

हे नज़र बहादुर!

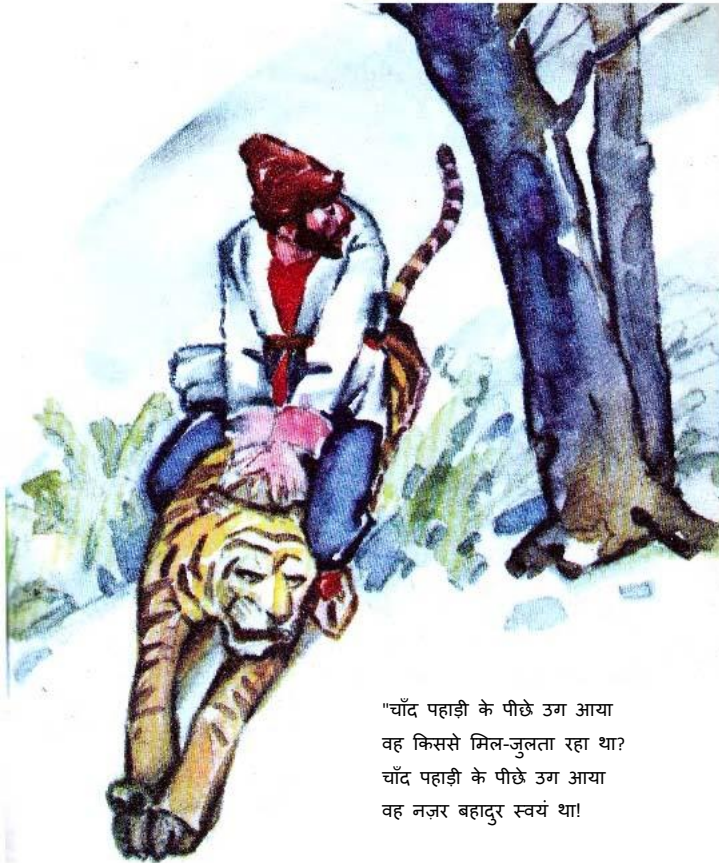
"उद्धारकर्ता! तुमने हमें आज़ाद किया!

हे उद्धारकर्ता! अब हमारी बात सुनो!

हम सदैव तुम्हारी स्तुति करेंगे, सदैव हमें बचाना!

हे नज़र बहादुर!"

नज़र बहादुर ने उन योद्धाओं की बहन से शादी की, और शादी की दावत सात दिनों और सात रातों तक चली। उसकी प्रशंसा में और उसकी दुल्हन की प्रशंसा में गीत गाए गए।



"चाँद पहाड़ी के पीछे उग आया
वह किससे मिल-जुलता रहा था?
चाँद पहाड़ी के पीछे उग आया
वह नज़र बहादुर स्वयं था!

"सूरज अपनी पूरी महिमा के साथ उदय हुआ
वह किससे मिलता-जुलता रहा?
सूर्य अपनी संपूर्ण महिमा में
वह नज़र बहादुर की गोरी दुल्हन थी.

"देखो, हमारे कुलीन राजा कितने न्यायप्रिय हैं!
देखो, उसका चमकता हुआ सूरज कितना उज्ज्वल है!
उसका मुकुट उज्ज्वल है - सबसे उज्ज्वल उज्ज्वल!
उसके वस्त्र उज्ज्वल हैं - सबसे उज्ज्वल उज्ज्वल!
उसकी बेल्ट उज्ज्वल-उज्ज्वल उज्ज्वल है!
उसके जूते चमकीले हैं—सबसे चमकीले!
उसकी रानी उज्ज्वल है - सबसे उज्ज्वल उज्ज्वल!
हम आपको और उज्ज्वल रानी को नमन करते हैं,
हे परम तेजस्वी राजा सूर्य!
हम आपको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं - सबकी जय हो!

"बहादुर नज़र! सबकी जय हो! सबकी जय हो!
और आपकी उज्ज्वल रानी - सबकी जय हो! सभी स्वागत करें!
और संपूर्ण विश्व-ऐल जय हो! सभी स्वागत करें"

इतना ही नहीं था.

ऐसा हुआ कि पड़ोसी देश का राजा उन योद्धाओं की बहन से खुद शादी करना चाहता था, और जब उसने सुना कि योद्धाओं ने उसकी शादी नज़र से कर दी है, तो उसने उन पर युद्ध की घोषणा कर दी और उनके महल पर हमला करने के लिए अपनी सेनाएँ भेज दीं.

योद्धा नज़र के पास आये और उन्होंने उसे युद्ध के बारे में बताया. फिर वे झुककर उसके सामने खड़े होकर उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे.

जैसे ही नज़र ने "युद्ध" शब्द सुना, वह महल से बाहर भागा. उसके दिमाग में बस एक ही विचार था कि जितनी तेजी से उसके पैर उसे ले जायें वह उतनी तेजी से अपने घर वापस पहुंचे. हर किसी ने सोचा कि वह अकेले और निहत्थे ही दुश्मन पर हमला करना चाहता था, इसलिए उन्होंने नज़र का रास्ता रोक दिया और उससे पहले खुद को हथियारों से लैस करने की विनती की.

हथियार लिए गए, जबकि उसकी पत्नी ने अपने भाइयों से विनती की कि वह उसे बाहर न जाने दें और अकेले ही दुश्मन सेना से मुकाबला न करने दें. नज़र बहादुर अकेले और निहत्थे ही दुश्मन पर हमला करना चाहता था, यह खबर पहले ही हर जगह फैल चुकी थी - सभी लोगों और सैनिकों ने उसे सुना था. फिर स्काउट्स ने जाकर दुश्मन की सेना को भी उसकी सूचना दे दी. फिर सात दिग्गज योद्धाओं के साथ नज़र के आने की सबको सूचना मिली.

युद्ध के मैदान में पहुँचने पर उसे एक बड़े काले घोड़े पर बिठाया गया, और सैनिकों ने चिल्लाना शुरू कर दिया;

"बहादुर नज़र अमर रहे! दुश्मन की मौत हो!?"

घोड़े को लगा कि उसकी पीठ पर बैठा आदमी कोई बहुत ही गरीब घुड़सवार था, इसलिए उसने अपने दांतों को थोड़ा दबाया और सीधे दुश्मन की सीमा पर छलांग मारी. दिग्गजों और उनके सभी योद्धाओं ने सोचा कि नज़र समर्थन की प्रतीक्षा किए बिना दुश्मन पर अकेले ही हमला कर रहा था, और फिर विजयी चिल्लाहट के साथ वे भी उसके पीछे हमला करने पहुंचे. अपने घोड़े को नियंत्रित करने में असमर्थ, नज़र आगे बढ़ा और फिर एक पेड़ की शाखा को पकड़कर सरपट दौड़ता हुआ आगे बढ़ा. वो अपनी काठी से बाहर निकलने की उम्मीद कर रहा था.

लेकिन पेड़ सूखा और सड़ा हुआ था, और वो शाखा टूट गई, और अब नज़र अपने हाथों में एक विशाल शाखा लेकर दुश्मन की ओर सरपट दौड़ रहा था.

शत्रु के सैनिक उसकी महान प्रसिद्धि से पहले ही डरे हुए थे. लेकिन जब उन्होंने वो नज़ारा देखा तब वे पीछे मुड़े और चिल्लाते हुए भागे, "अपनी जान बचाने के लिए भागो क्योंकि नज़र बहादुर हम पर हमला कर रहा है, वह रास्ते में आते पेड़ों को उनकी जड़ों से उखाड़कर फेंक रहा है!"

उस दिन बहुत से शत्रु मारे गए और जो जीवित बचे उन्होंने नज़र के चरणों में अपने हथियार डाल दिए और उसके प्रति निष्ठा की शपथ ली.

बड़े हर्षोल्लास के बीच नज़र बहादुर को वापस योद्धाओं के महल में ले जाया गया. लोगों ने उसके सम्मान में विजयी मेहराब बनाए और उसका जोरदार स्वागत किया, "हुर्र" और "नज़र बहादुर लंबे समय तक जीवित रहें", संगीत और गायन और अनगिनत भाषणों के साथ. नज़र इन सबसे खुद काफी अभिभूत हुआ.

इस महान जीत के बाद, नज़र को राजा घोषित किया गया और वह बड़ी धूमधाम और समारोह के बीच सिंहासन पर बैठा. सात योद्धाओं को उसका सलाहकार नियुक्त किया गया. और उसने देखा कि अब दुनिया उसके चरणों में थी.

लोग कहते हैं कि नज़र बहादुर आज भी वहीं राज करता है. और जब लोग उसकी उपस्थिति में वीरता, बुद्धिमत्ता या प्रतिभा की बात करते हैं, तो वह हँसता है और कहता है:

"कैसी वीरता!? क्या बुद्धिमत्ता!? क्या प्रतिभा!? ये सब खोखले शब्द हैं. यह सोरफ भाग्य का सवाल है. यदि आप भाग्यशाली हैं - तो आप जरूर खुशियाँ मनाएँगे!"

और लोग कहते हैं कि आज भी नज़र बहादुर खुश है और वो पूरी दुनिया पर हंस रहा है.



HOVHANNES TOUMANIAN
The Master and the Labourer
Nazar the Brave